हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून, 2025

11 समारोह में होगी समाज की प्रगति पर चर्चा

12 बाढड़ा उपमंडल भवन का बजट पूरा ,निर्माण के...

डॉ. गुंजन भारद्वाज
Sr. Consultant – Critical Care Medicine & Anesthesia
क्रिटिकल केयर मेडिसिन एवं एनेस्थीसिया विशेषज्ञ
MBBS, DA , DNB ,FNB (CRITICAL CARE MEDICINE)
14+ वर्षों का अनुभव

क्रीटिकल केयर मेडिसिन और एनेस्थीसिया समस्याओं का भरोसेमंद इलाज
डॉ. गुंजन भारद्वाज के साथ
गंभीर रोगियों का ICU में मॉनिटरिंग और इलाज | पुरानी साँस की बीमारी (दमा व COPD) | संक्रमण (Sepsis & Septic Shock) बिगड़ा हुआ निमोनिया | दिल का सदमा | लंबे समय से बुखार, एलर्जी | टाइफाइड, डेंगू, मलेरिया | पैरों में सूजन आना | खून की कमी ऑपरेशन के दौरान व बाद में दर्द रहित इलाज | बेहोशी की सुरक्षित प्रक्रिया (General, Spinal, Epidural आदि) | बच्चों और वयस्कों – दोनों के लिए विशेषज्ञ एनेस्थीसिया | दिल, दिमाग और थोरैसिक सर्जरी के लिए विशेष एनेस्थीसिया देखभाल | लंबी खाँसी | आंतों का संक्रमण | प्यूरल टैप | ICD डालना | साँस की मशीन का सपोर्ट | प्यूरल इफ्यूजन
यदि आप भी इन समस्याओं से परेशान हैं, तो आज ही हमारे विशेषज्ञ से परामर्श करें
आयुष्मान पैनेल पर ICU में सभी प्रकार का इलाज उपलब्ध*
जनसेवा में तत्पर MK हॉस्पिटल, भिवानी

एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

खबर संक्षेप

78 वर्षीय बुजुर्ग की ट्रेन की चपेट में आने से मौत

बवानीखेड़ा। सुबह एक दर्दनाक हादसे में 78 वर्षीय बुजुर्ग रामकिशन की ट्रेन की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई। रामकिशन रोज़ की तरह सुबह अपने खेत की ओर साइकिल से जा रहे थे। गांव से खेतों की ओर जाने वाले रेलवे अंडरपास में पानी भरे होने के कारण उन्होंने रेलवे लाइन पार करने का जोखिम उठाया। हांसी तोशाम मार्ग को जोड़ता है औरंग नगर स्टेशन. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, साइकिल का पहिया रेलवे ट्रैक में फँस गया।

प्रेरणा:100 वे नेत्रदानी बने नरेश

भिवानी। घोसियान चौक राजेंद्रा गली निवासी 53 वर्षीय नरेश आज भले ही दुनिया में न हो, परंतु उनकी आंखें दुनिया को देखती रहेंगी। डेरा सच्चा सौदा की ब्लड व आई डोनेशन समिति के जिम्मेवार मनीष इन्सां ने बताया की नरेश अपनी श्वांसों रूपी पूंजी पूर्ण कर कुल मालिक के चरणों में जा विराजे। पूज्य गुरु संत डा. गुरमीत राम रहीम सिंह इन्सां की प्रेरणा पर चलते हुए मनीष इन्सां ने नेत्रदान कराने लिए उनके परिवार को प्रेरित करवाया।

मकान से लाखों के गहने व कीमती सामान चोरी

चरखी दादरी। शहर के सिंघान मोहल्ले में चोरों ने एक बंद मकान से लाखों रूपये के गहने व अन्य कीमती सामान चोरी कर लिया। चोरों ने मकान की टीन तोड़ी और उसके सीढ़ियों का दरवाजा तोड़कर मकान में प्रवेश किया। पुलिस ने पीड़ित मकान मालिक की शिकायत पर अज्ञात लोगों पर मामला दर्ज कर लिया है। दादरी शहर के वार्ड नंबर 15 में सिंघान मोहल्ले निवासी विनोद गुप्ता उसकी पत्नी रेखा गुप्ता पिछले 15 दिनों से बाहर गए हुए थे। मकान पर ताला लगा हुआ था। बीती रात चोरों ने वारदात को अंजाम दिया।

पुरोहित सम्मेलन एवं व्यख्यान कार्यक्रम 6 को

भिवानी। कला, साहित्य और संस्कृति को समर्पित संस्था सांस्कृतिक मंच 6 जुलाई को संस्कार कार्यक्रम के अंतर्गत एक पुरोहित सम्मलेन और व्याख्यान का कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है. हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के सहयोग से यह कार्यक्रम सांस्कृतिक सदन में किया जाएगा।

स्नातक की प्रथम लिस्ट के विद्यार्थियों के रविवार को भी होंगे दाखिले: धीरज त्रिखा

दाखिला प्रक्रिया के तहत 26 जुलाई को प्रथम मेरिट लिस्ट जारी हो चुकी

स्नातक कक्षाओं के विभिन्न कोर्सों की सीटों पर दाखिला प्रक्रिया शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

उच्चतर शिक्षा निदेशालय के निर्देशानुसार सीबीएलयू के अंतर्गत आने वाले वैश्य महाविद्यालय में स्नातक कक्षाओं के विभिन्न कोर्सों की सीटों पर दाखिला प्रक्रिया के तहत 26 जुलाई को प्रथम मेरिट लिस्ट जारी हो चुकी है। जिसकी अंतिम तिथि 30 जुलाई को निर्धारित की गई है। विद्यार्थियों की दाखिले से संबंधित सुविधा देते हुए प्रथम मेरिट लिस्ट के विद्यार्थियों के लिए रविवार के दिन भी दाखिले करने का निर्णय लिया है। यह जानकारी देते हुए वैश्य महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य प्रो धीरज त्रिखा ने बताया कि उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा जारी किए गए शेडयूल के अनुसार स्नातक कक्षाओं के विभिन्न कोर्सों में दाखिला प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। जिसके लिए विभिन्न संकायों के लिए विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया है जिससे दाखिला प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है।

अंतिम तिथि 30 जुलाई को निर्धारित

उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में ऑनलाइन दाखिला प्रक्रिया के साथ साथ विद्यार्थियों की समस्याओं के निवारण के लिए भी ऑनलाइन हेल्प डेस्क सुविधा मुहैया कराई जा रही है ताकि किसी भी विद्यार्थी को दाखिला प्रक्रिया से संबंधित कोई भी जिज्ञासा या समस्या न रहे। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय में बच्चों को शैक्षणिक के साथ साथ व्यक्तित्व विकास के लिए भी उचित वातावरण मुहैया कराया जाएगा। ।महाविद्यालय की रजिस्ट्रार डॉ.श्रुति रानी ने बताया कि उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा दाखिला प्रक्रिया जारी हो चुकी हैं । उन्होंने कहा कि सभी दाखिले महानिदेशक उच्चतर शिक्षा हरियाणा के निर्देशानुसार मैरिट के आधार पर ऑन-लाईन होंगे तथा किसी भी विद्यार्थी को दाखिले से संबंधित कोई समस्या नही आने दी जाएगी।

भिवानी। फीस जमा करवाने के लिए लाइनों में लगे विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

पीएमी राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए नामंकन आमंत्रित

- आवेदन करने की 31 जुलाई अंतिम तिथि

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिवानी

महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (पीएमआरबीपी) के लिए नामांकन प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। इस बारे में जानकारी देते हुए एसडीएम विजया मलिक ने बताया कि यह पुरस्कार देश के उन प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करने के उद्देश्य से दिया जाता है जिन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं। एसडीएम ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार में कला एवं संस्कृति, खेल, नवाचार, विज्ञान, बहादुरी, समाज सेवा और शैक्षणिक उत्कृष्टता जैसी श्रेणियों में बच्चों का चयन किया जाता है। इस पुरस्कार के तहत कुल 25 बच्चों को चयनित किया जाएगा। एसडीएम विजया मलिक ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 26 दिसंबर को राष्ट्रीय वीर बाल दिवस के अवसर पर घोषित किए जाएंगे। चयनित बच्चों को जनवरी 2026 में आयोजित होने वाले समारोह में राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जाएगा, जो बच्चों के लिए अत्यंत गौरव की बात होगी। उन्होंने कहा कि 5 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु के बच्चे, जिन्होंने किसी भी उल्लेखनीय क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है, वे इस पुरस्कार के लिए आवेदन कर सकते हैं। नामांकन की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित की गई है। एसडीएम ने अभिभावकों, शिक्षकों, सामाजिक संगठनों तथा स्कूलों से आह्वान किया कि वे अपने क्षेत्र के योग्य और प्रतिभाशाली बच्चों को इस पुरस्कार के लिए नामांकित करने में आगे आएं।

प्रेरित किया

उन्होंने चयन प्रक्रिया की जानकारी देते हुए बताया कि सर्वप्रथम स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा प्राप्त आवेदनों की छंटनी की जाएगी। उसके उपरांत फाइनल नामों का चयन नेशनल कमेटी द्वारा किया जाएगा। अधिक जानकारी और आवेदन के लिए ऑनलाइन पोर्टल पर देखे। एसडीएम ने कहा कि यह पुरस्कार बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने और उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने अधिक से अधिक बच्चों को नामांकन के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की।

विकास कार्यो के लिए सरकारी खजाने लबालब: सर्राफ

35 लाख रुपये की लागत से सुधरेगी पांच गलियों की सेहत

विधायक सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने नारियल फोड़कर निर्माण कार्य करवाया शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

शनिवार को नगरपरिषद ने शहर के लोगों को 35 लाख रुपये की सौगात दी। विधायक घनश्याम सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से नारियल फोड़कर पांच गलियों के निर्माण कार्य शुरू करवाया। गलियों के निर्माण कार्य शुरू होने पर मिठाई बांटकर लोगों का मुंह मीठा करवाया। इस मौके पर विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि सार्वजनिक विकास कार्यो के लिए सरकार के खजाने लबालब है। जनता उनको सार्विजनिक कार्य बताए। वे उनको तत्काल पूरा करवाएंगे। विधायक घनश्याम सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह जुगलाल स्कूल इलाके में पहुंचे। यहां पर दोनों जनप्रतिनिधियों ने नारियल फोड़कर गली का निर्माण कार्य शुरू करवाया। उक्त गली कई दिनों से जर्जर थी। अब उक्त गली का निर्माण कार्य होने के बाद आसपास रहने वाले लोगों को सहुलियत होगी और साथ में शहर की स्वच्छता को पंख लगेंगे। इसके बाद विधायक सर्राफ तेलीवाड़ा इलाके में पहुंचे। यहां पर भी एक गली का निर्माण कार्य शुरू करवाया। इनके अलावा विधायक सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने तीन अन्य जगहों पर गलियों का निर्माण कार्य शुरू करवाया। अभी तक करीब शहर में साढ़े तीन सौ से ज्यादा गलियों को पक्का करवाया जा चुका है। अंदरूनी शहर के अलावा बाहरी शहर की गलियों को भी पक्का करवाया जा रहा है। इस मौके पर पार्षद हर्षदीप डुडेजा, अंकुर कौशिक, मदन पाल, जयबीर, अशोक, विनोद कुमार, सुरेश सैनी के अलावा अनेक लोग मौजूद थे।

भिवानी। नारियल फोड़कर गली के निर्माण कार्य शुरू करवाते विधायक घनश्याम सर्राफ व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह। फोटो : हरिभूमि

कोई भी गली रहेगी कच्ची: भवानी

नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि शहर की किसी भी गली को कच्चा नहीं रहने दिया जाएगा। अभी तक करीब साढे तीन सौ से ज्यादा गलियों को पक्का करवाया जा चुका है। अगर किसी इलाके में कोई गली कच्ची है तो उनको सूचना दे। वे उस गली का तत्काल एस्टीमेट बनवा कर पक्का करवाएंगे। किसी भी इलाके की कच्ची गली नहीं रहने दी जाएगी। विकास कार्यों में कोई ढिलाई नहीं होगी। साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी सरकार भी हर इलाके का चहुंमुखी विकास करवा रही है। सरकार विकास कार्यों के लिए दिल खोलकर बजट जारी कर रही है।

प्राथमिकता के आधार पर भिवानी का विकास: सर्राफ

विधायक घनश्याम सर्राफ ने बताया कि सरकार के पास विकास कार्यो के लिए बजट की कोई कमी नहीं है। अब से पहले भी सरकार ने विकास कार्यों के लिए खजाने का मुंह खोला। अब भी सार्वजनिक कार्यो के लिए सरकार दिल खोलकर बजट जारी कर रही है। सरकार प्रदेश के हर क्षेत्र का चहुंमुखी विकास करवा रही है। खासकर भिवानी के साथ सीएम नायाब सैनी का विशेष लगाव है। वे भिवानी का प्राथमिकता के आधार पर विकास कार्यों का बजट जारी करवा रहे है। सीएम नायाब सैनी की बदौलत भिवानी का चहुंमुखी विकास हुआ है।

झोटा चोरी करने के मामले में किया गिरफ्तार

भिवानी। थाना सिवानी पुलिस ने गांव कालोद से झोटा चोरी करने के मामले में चौथे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार उमेश निवासी कालोद ने थाना सिवानी पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि पांच मार्च की रात को चोर उनके गांव का झोटा पिकअप डाला में डालकर चोरी करके ले गए थे।

नाले का निर्माण नहीं होने से परेशानी

- दूषित पानी की निकासी नहीं होने से पसर रही गंदगी

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढड़ा

गांव चांदवास में नाले का निर्माण नहीं होने से लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है नाला कच्चा होने के कारण हादसे का भय लोगो में बना रहता है वहीं दूषित पानी की निकासी नहीं होने से आस पास के क्षेत्र में दुर्गंध बना रहती है जिससे आस पास में लोगों का रहना मुश्किल हो गया है। ग्रामीण सत्यवीर, रामभगत, अनिल, सुरेश आदि ने बतायाकि गांव चांदवास से जेवली रास्ते में नाले का निमाण नहीं होने के कारण आस पास के घरों में लोगों का रहना मुश्किल हो गया है ग्रामीण इस समस्या को लेकर कई बार अधिकारियों को अवगत करा चूके है लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि नाले का निर्माण नहीं होने रास्ते में हादसे होने का भय बना रहता है वहीं रात के समय अंधेरे में दोपहिया वाहन चालक कई बार हादसे का शिकार हो चूके है यह मैन रास्ता होने के कारण यहा हर समय लोगो का आवागमन लगा रहता है वहीं दूषित पानी होने के कारण आस पास के क्षेत्र में दुर्गंध बनी रहती है। नाले का निर्माण नहीं होने के कारण लोगो को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता हैं। नाले का निर्माण नहीं होने से यहां मक्खी मच्छर पनप रहे है।

बाढड़ा। गांव चांदवास मे कंडम नाला। फोटो : हरिभूमि

शिकायत: एंबुलेंस चालक गाड़ी चलाएगा या मरीज को संभालेगा

एम्बूलेंस में नहीं एमरजेंसी टैक्निशियन-स्टाफ

- एमरजेंसी मरीजों की जान जोखिम में, प्रशासन मौन
- हरिभूमि समाचार पत्र में खबर छपने के बाद दान दी हुई एंबुलेंस को वापस बवानी खेड़ा लगाया

दीपक कुमार डुमड़ा ⏭ बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा स्थित सब-डिविजनल हास्पिटल ''चतरभुज लाजपतराय जनरल अस्पताल'' की एंबुलेंस पर ईएमटी ''एमरजेंसी मेडिकल टेक्निशियन नहीं है। जिसके कारण एमरजेंसी मरीजों के पर मुसीबतों का पहाड़ टूटने के समान है। मरीजों के परिजनों व शहरवासियों ने बताया कि विभाग के अधिकारियों द्वारा यकायक ऐसा करना अखरता है क्योंकि मरीजों के लिए ईएमटी भगवान से कम नहीं थे। हालांकि बवानी खेड़ा एसडीएच है और बताया जाता है कि वर्ष 2018 से ईएमटी यहां कार्य कर रहे हैं।

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के सामान्य अस्पताल का भवन। (फाइल फोटो)

पीटीए में नहीं है जरूरत

भिवानी के सीएमओ रघुबीर शांडिल्य ने बताया कि बवानी खेड़ा एंबुलेंस में पीटीए ''पेंशेंट ट्रांसपोर्ट एंबुलेस'' न होने पर ईएमटी नही है। बीएलएस, एएलएस एंबुलेस में ईएमटी की तैनाती की जाएगी। इनमें उच्च स्तर की एडवांस मशीनरी होती है। हालांकि सोचने वाली बात ये है कि वर्ष 2018 से ईएमटी एंबुलेंस में कार्य कर रहे थे और विभाग के अधिकारियों को अब नीति याद आई। वहीं बवानी खेड़ा में एमरजेंसी मरीजों के लिए आफत खड़ी हो गई है।

एंबुलेंस पर लगाए तीनों ईएमटी को भेजा भिवानी

बवानी खेड़ा एंबुलेंस पर लगाए गए तीनों ईएमटी को भिवानी लगाया गया है जबकि यहां कि एंबुलेंस में लगे तीनों ईएमटी वाहन में अपनी पूरी डयूटी देते थे और एमरजेंसी मरीजों को एंबुलेंस में रेफर केस या इमरजेंसी केस में ऑक्सीजन देना, डिलीवरी केस में मदद करना, ग्लुकोज लगाना, बीपी चैक करना, मरहम पट्टी करना, समय समय पर जांच करना आई का कार्य करत थे। मरीजों के लिए इनकी एंबुलेंस में अहम भूमिका होती थी लेकिन इन तीनों कर्मचारियों की डयूटी भिवानी अस्पताल में लगाई गई है और यहां बवानी खेड़ा की एंबुलेंस भगवान भरोसे छोड़ी हुई है।

एंबुलेंस चालकों को दूर भेजा

गुप्त सूत्रों की मानें तो बवानी खेड़ा अस्पताल को डोनेट की गई एंबुलेंस को जमालपुर और जमालपुर की कंडम एंबुलेस को बवानी खेड़ा लगाए जाने पश्चात इसके चालकों पर भी चाबुक चलाया गया है। जमालपुर एंबुलेस चालकों को बवानी खेड़ा एंबुलेंस व बवानी खेड़ा एंबुलेस चालकों को दूर दराज के एरिया में भेजा गया है। वहीं जमालपुर की खराब एंबुलेंस को बवानी खेड़ा लगाए जाने की सूचना सीएमओ के पास पहुंचते ही उन्होंने बवानी खेड़ा अस्पताल को दान में दी गई एंबुलेंस को जमालपुर से वापिस बवानी खेड़ा लगवा दिया।

एंबुलेंस चालक वाहन चलाएगा या संभालेगा अमरजेंसी केस

पिछले दिनों बवानी खेड़ा रेलवे लाइन पर एक व्यक्ति के कटने पर बवानी खेड़ा के एंबुलेंस चालक द्वारा मौके पर पहुंचकर स्वयं कटे हुए इंसान को अन्य लोगों की मदद से एंबुलेंस में डाला और उसे भिवानी लेकर गया मरीज की हालत काफी खराब थी और वह चिल्ला रहा था। यदि एंबुलेंस में ईएमटी होता तो मरीज को संभाल सकता था और उसका उपचार कर सकता था। वहीं एंबुलेस चालक पर 112 एमडीटी टैब में भी लंबा चोड़ा डाटा ऑनलाइन करने का बोझ डाला गया है।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NBA ACCREDITED BY — B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #19 In North India | RANKED #39 Pvt. Institutes In India | RANKED #41 Across India | RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
GSAT 2025 MCQ based
GITAM SCHOLARSHIP -cum- ADMISSION TEST
13/07/2025 | 10:30 am Onwards
Free Registration at www.gangainstitute.com
Venue: GITAM, JHAJJAR (DELHI-NCR)
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DATA SC.), CSE (AI & ML)
ECE, MECHANICAL, ELECTRICAL, CIVIL
FIRE TECHNOLOGY AND SAFETY
FOR WORKING PROFESSIONALS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY, CSE), M.TECH (CSE), MBA
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
For Admission Enquiry
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi +91-9654292902, 03, 04

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

रामू बने कष्ट निवारण समिति के सदस्य

भिवानी। पूर्व पार्षद रामू जेवड़ीवाला को जिला कष्ट निवारण समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। उनकी यह नियुक्ति स्थानीय प्रशासन और नागरिकों के बीच सेतु का काम करेगी, जिससे लोगों की समस्याओं का समाधान अधिक सुगमता से हो सकेगा। बता दे कि रामू जेवड़ीवाला (रामअवतार गोयल) भिवानी में एक सुपरिचित चेहरा हैं, जिन्होंने पूर्व में पार्षद के रूप में कार्य करते हुए क्षेत्र के विकास और जनहित के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी यह नई भूमिका उन्हें जिले के नागरिकों की शिकायतों और कठिनाइयों को सीधे सरकार तक पहुंचाने का अवसर देगी, साथ ही उनके निवारण में भी सहायता प्रदान करेगी।

स्वर्णप्राशन संस्कार का किया भव्य आयोजन

चरखी दादरी। एम.एल.आर. आयुर्वेदिक कॉलेज एवं हॉस्पिटल परिसर में स्वर्णप्राशन संस्कार के तहत 45 बच्चों को यह दिव्य औषधि सेवन करवाई गई। क्षेत्र में आयोजन को आयुर्वेद और स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक प्रेरणास्पद पहल के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि एम.एल.आर. आयुर्वेदिक कॉलेज आयुर्वेदिक जागरूकता व जनकल्याण हेतु निरंतर प्रयासरत है और ऐसे आयोजन इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

इस विशेष कार्यक्रम का संचालन बाल रोग विशेषज्ञ (कौमारभृत्य विभाग) डॉ. विजय पंवार, के निर्देशन किया गया। उन्होंने स्वर्णप्राशन की प्रक्रिया को वैज्ञानिक और पारंपरिक दृष्टिकोण से सफलतापूर्वक संपन्न कराया। उन्होंने बताया कि स्वर्णप्राशन, एक प्राचीन आयुर्वेदिक संस्कार, बच्चों की स्मृति, बुद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा शारीरिक बल को बढ़ाने हेतु पुष्य नक्षत्र के शुभ अवसर पर कराया जाता है। इ कार्यक्रम में शामिल बच्चों के अभिभावकों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह आयुर्वेद की ओर लौटने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डॉक्टरों द्वारा की गई स्वास्थ्य जांच की गई।

बाबा जाट वाला मंदिर सिहमा में रोट आज

मंडी अटेली। खंड सिहमा के बाबा जाट वाला मंदिर में आज 29 जून को रोट आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए सरपंच सुमन देवी ने बताया कि जाट वाला मंदिर परिसर में सुबह प्रात सवा सात बजे हवन यज्ञ किया जाएगा। उसके बाद 10 बजे बाबा का प्रसाद वितरण किया जाएगा। इस रोट में आसपास के गांव से हजारों की संख्या में बाबा का प्रसाद ग्रहण करेंगे।

रिटायर्ड कर्मचारी संघ की बैठक एक को

नारनौल। रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित अखिल भारतीय राज्य पेंशनर्स फेडरेशन की बैठक एक जुलाई को यादव धर्मशाला में प्रातः 10 बजे आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर राज्य प्रधान मास्टर वजीर सिंह, महासचिव रतन जिंदल नौ जुलाई की हड़ताल, 15 जुलाई को उपायुक्त कार्यालय पर रिटायर्ड कर्मचारी संघ के धरने की तैयारी के लिए बैठक को संबोधित करेंगे।

स्टोन क्रेशर एसोसिएशन अध्यक्ष लोगों से की मुलाकात

कालेज में रिक्त पदों की कब सुध लेगी सरकार: सोमबीर

उपमंडल मुख्यालय बाढड़ा, कादमा, मांढी केहर कालेजों में 70 फिसदी रिक्त पदों को भरने के लिए कोई कदम नहीं उठाया

- सरकार पर हलके में विकास न करने का लगाया आरोप

बाढड़ा। स्टोन क्रेशर एसोसिएशन अध्यक्ष सोमबीर घसौला।

क्षेत्र में विकास नहीं होने पर आंदोलन को चेताया

राजस्व विभाग के तहसील सरल केंद्रों पर बिजली आपूर्ति में बार बार कटौती होने से बिजली पावर उपकरण भी जवाब दे गए और जब भी आपूर्ति होती तो वहां कार्यरत कंप्यूटर आपरेटर काम शुरु करते तो या तो दोबारा बिजली आपूर्ति में कट लग जाता या फिर पीछे से आनलाईन प्रक्रिया में तकनीकी खराबी आ जाती और इससे सरल केन्द्र पर पूरे होने वाले भूमि की खरीद फरोख्त की रजिस्ट्री, युवाओं के रिहायशी प्रमाणपत्र, ईडब्लयूएस, बीसीबी, बीसीए, डीएससी और ओएससी जैसे आवश्यक दस्तावेज भी तैयार नहीं हो पाए। उन्होंने कहा कि सरकार ने जल्द ही इस क्षेत्र की सुध नहीं ली तो बड़ा आंदोलन शुरु किया जाएगा।

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढड़ा

उपमंडल मुख्यालय बाढड़ा, कादमा, मांढी केहर कालेजों में 70 फिसदी रिक्त पदों को भरने के लिए कोई कदम नहीं उठाना वहीं बाढड़ा उपमंडल क्षेत्र में पिछले रबी सीजन की फसलों पर ओलावृष्टि, बेमौसमी बरसात के कारण किसानों की पच्चास गांवों के नुकसान की भरपाई के लिए सरकार की चुप्पी हैरानी की बात है। सरकार ने जल्द ही इस क्षेत्र की सुध नहीं ली तो क्षेत्र के सभी सामाजिक संगठन एकजुट होकर सरकार के खिलाफ आंदोलन का शंखनाद करेंगे। यह बात स्टोन क्रेशर एसोसिएशन अध्यक्ष सोमबीर घसौला ने हलके के आधा दर्जन गांवों में पंचायत प्रतिनिधियों से मुलाकात करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पिछले पांच साल से महिला कालेज में एक सौ लड़कियों को अंग्रेजी विषय का मात्र एक प्रोफेसर पढा रहा है जबकी सरकार नारी शिक्षा सुरक्षा के नाम पर बड़े बड़े दावे कर सब्जबाग दिखा रही है। जनता द्वारा चुने गए नुमाईंदे चंडीगढ जाकर मुख्यमंत्री या मंत्रियों से क्षेत्र में बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में कोई सौगात लाने की बजाए कभी बीडीपीओ कार्यालयों तो कभी किसान भवनों में जाकर दबाव बना रहे हैं। अनुभवहीन नेताओं व सरकार के सहयोग के बिना अधिकारी भी अब यहां पर आने से कतराने लगे हैं जो सरकार की नाकामी का जीता जागता सबूत है। भाजपा सरकार चुनाव के समय रोजगार, पीले कार्ड देने का काम करती है लेकिन चुनाव का लक्ष्य पूरा होते ही रातोंरात गरीब परिवारों की सुविधाएं बंद की जा रही हैं। पंजाब से नहरी पानी मिलना हमारा अधिकार है लेकिन भाजपा आप, अन्य दलों ने आपसी सांठगांठ कर प्रदेश के हितों से कुठाराघात कर रही हैं। विपक्ष में रहकर एसवाईएल का पानी लाने का झूठा सपना दिखाने वाली भाजपा सरकार केन्द्र में 11 वर्ष से सतासीन है लेकिन एक कदम भी नहीं बढा पाई और विधानसभा चुनाव में भाजपा की बी टीम बनी आप पार्टी अब पंजाब चुनाव नजदीक देखकर प्रदेश की जनता को भ्रमित करने का प्रयास कर रही हैं। सीईटी के नाम पर बड़ी बड़ी बातें करनी वाली सरकार बताए कि प्रदेश के सरल केन्द्रों में बिजली न होने से वह बेरोजगारों के प्रमाणपत्र तक जारी नहीं करवा पाए हैं जिससे अनुमसचित, पिछड़े वर्ग के अ यर्थियों को सामान्य वर्ग में आवेदन करना पड़ रहा है।

रामनिवास पिचौपा को कष्ट निवारण समिति का सदस्य बनाने पर शीर्ष नेतृत्व का जताया आभार

- प्रदेश सरकार के आदेशानुसार जिला कष्ट निवारण समिति में नए सदस्यों का मनोयन किया

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

इस मौके पर ये रहे मौजूद

इस अवसर पर भाजपा के कार्यकर्ता झोझू मंडल सोशल मीडिया प्रभारी प्रदीप यादव, बिजेंद्र जांगड़ा पिचोपा, मीरसिंह फौजी बिंद्रावन, नवीन बिंद्रावन, अशोक पिचोपा, मंडल सचिव राजबाला देवी, मुनेश खान, सतवीर शर्मा बिलावल, आजाद खान पिचोंपा, रोशनलाल शर्मा बिलावल, कमलकांत पिचोंपा, पूजा शर्मा आदि थे।

प्रदेश सरकार के आदेशानुसार हाल ही में जिला कष्ट निवारण समिति में नए सदस्यों का मनोयन किया गया है। इस कदम के पीछे सरकार का यही लक्ष्य है कि अधिक से अधिक आम नागरिकों को सुविधाएं देते हुए उनको होने वाली समस्याओं को हल करवाने के लिए काम किया जा सके। कष्ट निवारण समिति में क्षेत्र के उन मौजिज लोगों को शामिल किया जाता है जो कि पिछले लंबे समय से अपने कार्य के जरिए जन सेवा में लगातार सक्रिय है। इसी कड़ी में आज भाजपा वरिष्ठ नेता व झोझू मंडल प्रतिनिधि रामनिवास शर्मा पिचोपा को बतौर सदस्य मनोनीत किए गया। उनके मनोयन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने रामनिवास शर्मा पिचोपा का स्वागत किया। मिठाई वितरत कर अपनी प्रसन्नता का इजहार किया गया तथा सभी कार्यकर्ताओं ने लड्डू खिलाकर व पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया। रामनिवास पिचोंपा ने जिला कष्ट निवारण समिति का सदस्य मनोनीत करने के लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का आभार जताया व कहा कि यह दायित्व मेरे लिए केवल सम्मान नहीं बल्कि जन सेवा का नया संकल्प है। जनता की समस्या को सुनना, समझना व समाधान की दिशा में प्रयासरत रहना अब यहीं मेरे जीवन का उद्देश्य है। मैं वचन देता हूं कि इस पद की गरिमा को बनाए रखते हुए हर शिकायत पर संवेदनशीलता और सक्रियता से कार्य करूंगा।

जल्द खतम होगी दादरी शहर की पानी और सीवरेज की समस्या: चेयरमैन

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

!!!!!!!!!!!!!!

चेयरमैन ने कहा कि पूरा प्रयास है कि दादरी के हर एक जगह पर पेयजल सहित अन्य मूलभुत सुविधाएं पहुंचे। जहां आवश्यक है वहा नई लाईन को बिछवाया जा रहा है। पुरानी को तबदील करने के लिए भी आवश्यक सभी जांच की जा रही है। इसलिए संबंधित विभाग से तालमेल मिलाकर काम धरातल पर उतारा जा रहा है। उम्मीद है कि काठ मंडी में इस लाईन के काम को जल्द से जल्द पूरा कर लिया जाएगा।

दादरी शहर के प्रत्येक कोने तक पेयजल की सुचारू आपूर्ति के लिए तेजी से काम किया जा रहा है। नगर परिषद चेयरमैन बख्शीराम सैनी स्वयं चल रहे कामों का निरिक्षण कर रहे है। उनका यही प्रयास है कि पूरे नगर के हर एक हिस्से व प्रत्येक वार्ड तक पेयजल सहित अन्यू मूलभुत सुविधाओं को पहुंचाया जाए, इसके लिए जल्द से जल्द काम धरातल पर पूरा करवाया जाए, जिससे कि सभी लोगों को इन सभी सुविधाओं का लाभ सीधे तौर पर अधिक से अधिक मिल सके। खास कर नगर व आसपास के क्षेत्र की पुरानी समस्या पेजयल, सीवरेज को लेकर काम करवाना प्रमुख लक्ष्य है।

10.30 ग्राम हेरोइन के साथ युवक काबू

- सूचना के बाद टीम ने कलकल सर्विस स्टेशन के पास दबिश दी

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

चरखी दादरी। पुलिस हिरासत में मादक पदार्थ सहित काबू किया गया आरोपी।

हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की टीम ने एक युवक को मादक पदार्थ हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया है। सूचना के बाद टीम ने कलकल सर्विस स्टेशन के समीप दबिश दी।पुलिस प्रवक्ता योगेश कुमार ने बताया कि शुक्रवार को हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के सहायक उप निरीक्षक बिजेन्द्र अपनी टीम रावलधी चौक दादरी पर मौजूद था। उस दौरान सूचना मिली कि एक युवक नशीला पदार्थ हेरोइन बेचने का काम करता है। वह इस वक्त कलकल सर्विस स्टेशन के पास किसी खरीददार के इंतजार मे खड़ा है। सूचना के बाद टीम ने कलकल सर्विस स्टेशन के समीप दबिश दी। वहां एक एक युवक खड़ा मिला, जिसको काबू कर लिया। युवक की तलाशी लेने पर 10.30 ग्राम हिरोइन बरामद हुई। आरपी की पहचान लाम्बा गांव निवासी मंदीप के रूप में हुई। पुलिस टीम ने बरामद हेरोइन को जब्त कर एनडीपीएस एक्ट के तहत थाना मुकदमा दर्ज किया। आरोपी मंदीप को कोर्ट में पेश कर एक दिन के रिमांड पर लिया गया है।

'एक पौधा मां के नाम' अभियान के तहत रोपे पौधे

- मातृ प्रेम और उनके त्याग की स्मृति को भी चिरस्थायी बनाएंगे रोपित किए गए पौधें : चरणदास

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। मंदिर परिसर में पौधारोपित करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

पर्यावरण संरक्षण और मातृशक्ति के सम्मान में शनिवार को युवा जागृति एवं एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर परिसर में एक पौधा मां के नाम अभियान के तहत 78 पौधों का रोपण किया गया।

मंदिर के महंत बालयोगी चरणदास के सान्निध्य में आयोजित हुए पौधारोपण कार्यक्रम में वरदान चुघ अस्पताल की टीम से डा. अंकित खत्री, मुकेश सैनी ने 51 पौधे सहित ऋषि प्रिय गर्ग, रचना गर्ग व वर्चस्व गर्ग परिवार ने 11, भारत भूषण हैप्पी परिवार ने 11 तथा देवरत्न आर्य परिवार ने 5 पौधें रोपित किए तथा देखभाल की जिम्मेवारी भी ली गई। बालयोगी महंत चरणदास ने कहा कि यह अभियान विशेष रूप से माताओं को समर्पित था, जिन्होंने अपने जीवन में हमें पाल-पोस कर बड़ा किया है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक पौधा एक मां के नाम पर लगाया गया है, जो ना केवल पर्यावरण को हरा-भरा बनाएगा, बल्कि मातृ प्रेम और उनके त्याग की स्मृति को भी चिरस्थायी बनाएगा।

लोगों को किया पर्यावरण के प्रति जागरूक

चरणदास ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य केवल पौधारोपण करना नहीं, बल्कि लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना और उन्हें अपनी माताओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक अनोखा तरीका प्रदान करना भी है। यह पहल निश्चित रूप से समाज में एक सकारात्मक संदेश देगी और दूसरों को भी ऐसे नेक कार्यों के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार हैं और हमें इनकी देखभाल अपनी संतान की तरह करनी चाहिए। उन्होंने एक पौधा मां के नाम जैसे अभियानों की सराहना की और ऐसे प्रयासों को समाज में निरंतर जारी रखने का आह्वान किया।

पीयूष दुबे ने जीता रजत पदक, किया सम्मानित

- गुरुदेवराज बॉक्सिंग क्लब में जश्न का माहौल

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। पदक विजेताओं के साथ खेल प्रशिक्षक। *फोटो: हरिभूमि*

हरियाणा के रोहतक शहर में आयोजित 6वीं अंडर-17 जूनियर बॉयज एवं गर्ल्स नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भिवानी के गुरुदेवराज बॉक्सिंग क्लब के दो युवा मुक्केबाजों ने दमदार प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में क्लब के खिलाड़ी पीयूष दुबे और आकाश तंवर ने हिस्सा लिया और अपने उत्कृष्ट खेल कौशल से सभी को प्रभावित किया। क्लब के कोच नीरज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि आकाश तंवर ने 46 किलोग्राम भार वर्ग में खेलते हुए शुरुआती दो मुकाबले शानदार तरीके से जीते। हालांकि वे क्वार्टर फाइनल में एक कड़े मुकाबले के दौरान 3-2 के स्कोर से पराजित हो गए। वहीं, 50 किलोग्राम भार वर्ग में खेलने वाले पीयूष दुबे ने दमदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल तक का सफर तय किया और रजत पदक अपने नाम किया। फाइनल मुकाबले में पीयूष को जबरदस्त चुनौती मिली, लेकिन उन्होंने पूरे आत्मविश्वास और रणनीति के साथ मुकाबला लड़ा। हालांकि वे स्वर्ण पदक से चूक गए, लेकिन रजत पदक प्राप्त कर उन्होंने अपने क्लब, परिवार और जिले का नाम रोशन किया। चैंपियनशिप के दौरान दोनों खिलाड़ियों की फुर्ती, तकनीक और पंचों की ताकत ने दर्शकों और कोचों का ध्यान आकर्षित किया।इस सफलता पर गुरुदेवराज बॉक्सिंग क्लब में खुशी की लहर दौड़ गई। क्लब के सभी सदस्यों ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई दी और कहा कि यह उपलब्धि न केवल क्लब बल्कि पूरे भिवानी जिले के लिए गर्व का विषय है।

कड़ी मेहनत का फल

कोच नीरज चुना ने कहा कि दोनों मुक्केबाजों ने कड़ी मेहनत, अनुशासन और लगन से यह मुकाम हासिल किया है। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में ये दोनों खिलाड़ी और भी बड़ी उपलब्धियां हासिल करेंगे और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भिवानी का नाम और ऊंचा करेंगे। इस उपलब्धि से उत्साहित क्लब प्रबंधन अब और अधिक बच्चों को प्रशिक्षण देकर भविष्य के चैंपियनों को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संविधान से समाजवादी व धर्मनिरपेक्षता शब्द हटाने के बयान की कड़े शब्दों में निंदा

- आरएसएस महासचिव के ब्यान ने की आरएसएस व भाजपा की मंशा उजागर : कामरेड ओमप्रकाश

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

संविधान के मूल ढांचे को बदलने की साजिश का आरोप

उन्होंने आरोप लगाया कि एक तरफ भाजपा 25 जून 1975 में लगाए गए आपातकाल को लेकर देश में संविधान व लोकतंत्र विरोधी काला दिवस मनाने का ढोंग रचती है, वहीं इसकी केन्द्र सरकार ने देश की जनता पर अघोषित आपातकाल थोप रखा है और संविधान के मूल ढांचे को बदलने की साजिश कर रही है। देश की सजग जनता उनके नापाक हरकतों को कभी सफल नहीं होने देगी।

माक्र्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने आरएसएस महासचिव के उस ब्यान की कड़ी निंदा की है, जिसमें उन्होंने संविधान से समाजवादी और धर्मनिरपेक्षता शब्द हटाने की मांग की। उनके ब्यान ने आरएसएस व भाजपा की मंशा उजागर कर दी। माकपा जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश ने कहा कि आरएसएस महासचिव द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना से समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्दों को हटाने के आरएसएस महासचिव द्वारा किए गए प्रस्ताव की माकपा निंदा करती है। उन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव संविधान को नष्ट करने के आरएसएस के दीर्घकालिक उद्देश्य और अपने हिंदुत्व प्रोजेक्ट के लिए भारत को एक धर्म आधारित राष्ट्र में बदलने के उसके इरादे को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान स्वतंत्रता के लिए हमारे ऐतिहासिक उपनिवेश विरोधी संघर्ष की विभिन्न धाराओं के अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों की आकांक्षाओं का प्रतीक है। प्रस्तावना में समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता को शामिल करना कोई मनमाने तरीके से नहीं जोड़ा गया है। यह उन मूल मूल्यों को दर्शाता है जिनके लिए शहीद-ए-आजम भगत सिंह और उनके साथियों जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। संविधान के हर प्रावधान में उनके आदर्श अंतर्निहित हैं और इन शब्दों को शामिल करना केवल उस विरासत की पुष्टि करता है। उन्होंने कहा कि आरएसएस ने स्वतंत्रता आंदोलन में कोई भूमिका नहीं निभाई, के लिए अब इन आधारभूत सिद्धांतों को हटाने की वकालत करना पाखंड की पराकाष्ठा है।

आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने गाड़े बुलंदियों के झंडे

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

अध्यापकों के मार्ग दर्शन को सराहा

स्कूल प्रबंधक शमशेर सिंह और सत्येंद्र सिंह ने, विद्यालय की प्राचार्या तरंग गौड़ और अध्यापकों के उचित मार्गदर्शन की सराहना की। उन्होंने कहा कि आदर्श एकेडमी ऑफ साइंस ऐसा मंच है जहां पर हर बच्चे की प्रतिभा को निखार कर उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाने का काम अभिभावकों के विश्वास के अनुरूप किया जा रहा है उनका मानना है कि भविष्य में भी आदर्श विद्या मंदिर के अध्यापक इसी तरह के परिणाम देते रहेंगे।

आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थियों और आदर्श परिवार के लिए यह गौरव का विषय है कि यहां के विद्यार्थी न केवल नीट, जेईई, यूपीएससी में ही अपना हुनर दिखा रहे हैं बल्कि नीफ्ट(नेशनल इंस्टीट्यूट आफ फैशन टेक्नोलॉजी) में भी सफलता हासिल कर रहे हैं। जेईई परीक्षा का आयोजन आईआईटी और एन आई टी जैसे प्रतिष्ठ संस्थानों में प्रवेश के लिए किया जाता है जबकि निफ्ट का आयोजन फैशन और डिजाइन के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए किया जाता है। नीट का आयोजन भारत के विभिन्न मेडिकल डेंटल और आयुष कॉलेज में प्रवेश के लिए किया जाता है। आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने 12वीं परीक्षा में अच्छे अंक लेते हुए नीट, जेईई व नीफ्ट की परीक्षा में भी अच्छे रैंक लिए हैं। नीट परीक्षा में आदर्श विद्या मंदिर के कई छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इन छात्रों में मयंक, महिमा ,आशिमा ,अंजलि कोमल, मेघा ,सृष्टि और अन्य छात्र शामिल हैं। जेईई में निशांत और मोहित ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, उनकी इस उपलब्धि से विद्यालय के सभी छात्रों और शिक्षकों को उन पर गर्व है। इसी तरह अनन्या ने निफ्ट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एक अच्छी रैंक हासिल की है उनकी इस उपलब्धि से न केवल आदर्श विद्या मंदिर का नाम रोशन हुआ है बल्कि हरियाणा का भी नाम पूरे देश में गर्व से ऊंचा हुआ है बच्चों को अपनी मेहनत और समर्पण ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है।

श्री दक्ष प्रजापति जयंती के लिए निमंत्रण अभियान जारी

समारोह में होगी समाज की प्रगति पर चर्चा

- महाराजा दक्ष प्रजापति के जीवन आदर्शों को समारोह में किया जाएगा याद : मामन चंद

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। कार्यक्रम का निमंत्रण देते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

ये रहे मौजूद

इस मौके पर महाबीर मोखरा और सतपाल ठेकेदार ने बताया कि इस समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्यअतिथि शिरकत करेंगे। इसके अलावा केबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा सहित अन्य मंत्रीगण भी कार्यक्रम में पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि यह समारोह प्रजापति समाज के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिसमें पूरे प्रदेश से लोग एकजुट होंगे। इस दौरान समाज की एकजुटता और प्रगति पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि समारोह में महाराजा दक्ष प्रजापति के जीवन, उनके आदर्शों और सनातन परंपरा में उनके योगदान को याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक चेतना और पुरातन मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास है। उन्होंने बताया कि आयोजन कमेटी के सदस्य गांव-गांव और शहर-शहर जाकर लोगों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर रहे हैं और उन्हें इस ऐतिहासिक अवसर का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने सभी से अपील की है कि वे 13 जुलाई को भिवानी में होने वाले इस प्रदेश स्तरीय समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचें और इसे सफल बनाएं।

मेला ग्राऊंड में आयोजित होने वाले श्री दक्ष प्रजापति जयंती के प्रदेश स्तरीय समारोह के लिए निमंत्रण अभियान जोरों पर है। समारोह को भव्य और सफल बनाने के लिए श्री दक्ष प्रजापति जयंती की आयोजन कमेटी के सदस्य विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को कार्यक्रम में शामिल होने का न्यौता दे रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को आयोजन कमेटी के सदस्यों महाबीर मोखरा, पूर्व चेयरमैन मामनचंद, सतपाल ठेकेदार, रमेश टाक, संजय कुमार के नेतृत्व में शहर में विभिन्न स्थानों पर निमंत्रण अभियान चलाया तथा अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में पहुंचने का निमंत्रण लोगों को दिया। इस अवसर पर डा. जगदीश प्रजापति, राहुल, सुरेंद्र, सुभाष, रामनिवास, जोगेंद्र, महाबीर, डा. जिले सिंह, नरेश वर्मा, ईश्वर सिंह, डा. आशीष, रामचंद, बलवान, सत्यनारायण, राहुल, डा. शमशेर, हरिओम, बिंद्र सैनी सहित अन्य लोग भी मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

जामपुर सेवा समिति द्वारा जून माह का हड्डी जांच शिविर कल : पोपली

भिवानी। जरूरतमंद व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं को आसान से पहुंचाने के लिए जामपुर सेवा समिति द्वारा कृष्णा कॉलोनी स्थित डा. विद्या सागर चैरिटेबल अस्पताल में हर माह के अंतिम रविवार को हड्डी जांच शिविर का आयोजन करवाया जाता था, जो कि अब रविवार की बजाए प्रत्येक माह के अंतिम सोमवार को आयोजित करवाया जाएगा। इसी कड़ी में जून माह का हड्डी जांच शिविर 30 जून को आयोजित करवाया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जामपुर सेवा समिति के प्रधान गोपाल कृष्ण पोपली व महासचिव विनोद मिर्ग ने बताया कि कृष्णा कॉलोनी स्थित डा. विद्या सागर चैरिटेबल अस्पताल में 30 जून को आयोजित होने वाले हड्डी जांच शिविर में कल्याणी अस्पताल गुरूग्राम से डा. विक्रांत खन्ना अपनी सेवाएं देंगे। उन्होंने बताया कि शिविर में मशीन द्वारा हड्डियों की संपूर्ण जांच व फिजियोथैरेपी की जाएगी।

5 प्रतिशत वेतन वृद्धि पर कर्मचारियों में खुशी

भिवानी। हरियाणा कौशल रोजगार निगम (एचकेआरएन) के तहत कार्यरत हजारों कर्मचारियों को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार ने बड़ी राहत देने का काम किया है। सरकार ने इन कर्मचारियों के वेतन में 5 प्रतिशत की बढ़ोतरी को मंजूरी दे दी है, जो कि एक जून से लागू हो चुका। प्रदेश सरकार के इस कर्मचारी हित के फैसले से एचकेआरएन के अंतर्गत विभिन्न विभागों में सेवाएं दे रहे कर्मचारियों में हर्ष का माहौल है। वही हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड कर्मचारियों ने भी प्रदेश सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हुए इसे कर्मचारी हित में काफी महत्वपूर्ण बताया तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड में लड्डू बाटकर खुशी मनाई। उन्होंने कहा कि महंगाई के इस दौर में 5 प्रतिशत की यह बढ़ोतरी उनके मासिक बजट में थोड़ी राहत प्रदान करेगी। पवन शर्मा हालुवासिया ने कहा कि इस वेतन वृद्धि से एचकेआरएन कर्मचारियों का मनोबल बढ़ेगा तथा वे और अधिक समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर पाएंगे।

निर्माण कार्य पूरा होने पर 50 गांवों के ग्रामीणों को एक छत के नीचे मिलेंगी सभी सुविधाए

बाढड़ा उपमंडल भवन का बजट पूरा ,निर्माण के लिए एक करोड़ 50 लाख की और भेजी डिमांड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़ड़ा

बाढड़ा।कस्बे के ढिगावा मंडी रोड़ पर निर्माणाधीन लघु सचिवालय का भवन।

उपमंडल मुख्यालय के लघु सचिवालय का बजट पुरा और बजट के लिए फाइल भेजी है मुख्यालय के बजट की 18.18 करोड़ की राशि पूरी हो चुकी है अब भी काम बाकि है अधिकारियों को नए भवन के लिए अभी ओर इंतजार करना होगा। निर्माण के लिए 1.50 करोड का बजट और मांगा गया है। एक छत के नीचे सभी सुविधाएं पाने की क्षेत्र के आमजन की वर्षो पुरानी मांग पर आखिकरकार प्रदेश सरकार के लोकनिर्माण विभाग ने 18करोड़ 18 लाख की लागत से निर्मित होने वाले तीन मंजिला भवन का निर्माण कार्य अंतिम दोर में है जो पिछले माह से लगातार युद्धस्तर पर चल रहा है। लेकिन अभी भवन के निर्माण में और समय लगेगा।

इस भवन की पिछले 11 फरवरी 2022 को प्रदेश के डिप्टी सीएम दुष्यंत सिंह चौटाला ने नींव रखी थी। प्रदेश सरकार ने वर्ष 2026 में बाढड़ा तहसील को अपग्रेड करते हुए उपमंडल का दर्जा दिया था, लेकिन पहले भूमि की कमी के कारण मुख्यालय भवन निर्मित नहीं हो पाया है। उपमंडल का दर्जा मिलते ही जिला प्रशासन न कस्बे की अनाजमंडी के किसान विश्रामगृह में उपमंडल भवन संचालित किया था बाद में इसको पंचायत विभाग के बीडीपीओ कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया लेकिन वह भवन तोडऩे के आदेश के बाद अब मौजूदा समय में कस्बे के केनाल विश्रामगृह में उपमंडल भवन संचालित है वहीं सरकार के उपमंडल रोजगार कार्यालय, डीएसपी कार्यालय, सीडीपीओ, कानूनगो व पटवार भवन, कृषि विभाग से लेकर दर्जन भर अन्य विभाग किराए के भवनों में चल रहे हैं जिससे आमजन को मामूली कार्य के लिए दर -दर भटक रहे हैं।

बता दे कि कस्बे में लघु सचिवालय के लिए पिछले पांच वर्ष से भूमि चयन प्रक्रिया चल रही थी और उपायुक्त की अगुवाई वाली टीमें चांदवास वनक्षेत्र, हंसावास खुर्द के अलावा बाढड़ा में जगह फाईनल हुईं लेकिन वर्ष 2021 में मुख्य सचिव ने बाढड़ा के ढिगावा मंडी रोड़ पर नहर के साथ लगते रकबे पर भवन निर्माण को स्वीकृति पत्र जारी किया तो क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई तथा 11 फरवरी 2022 में प्रदेश के डिप्टी सीएम दुष्यंत सिंह चौटाला ने यहां पहुंच कर नींव रखकर जल्द ही भवन निर्माण करवाने का भरोसा दिया। दूसरी साईड में न्यायालय एवं विधि शाखा के कार्यालय संचालित किए जाऐंगे। इसके निर्माण के बाद सभी विभाग एक ही छत के नीचे सेवाएं देंगे वहीं ग्रामीण क्षेत्र के आमजन के कामकाज में तेजी व सुलभता आएगी। लोकनिर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता ने कहा कि उपमंडल भवन के लिए 18 करोड़ की राशि के टेंडर जारी करवा कर तीन फेज का निर्माण कार्य चल रहा है।

जनता को मिलेंगी कई सुविधाएं

बाढड़ा उपमंडल मुख्यालय के पास स्वयं का भवन न होने से आमजन को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा था वहीं कई विभाग मजबूरीवश जिला मुख्यालय से संचालित हैं। प्रदेश सरकार ने कोविड से पहले ही कस्बे में आधुनिक माइल का भव्य लघु सचिवालय का कार्यालय निर्माण का भरोसा दिया था लेकिन भूमि चयन में देरी हो गई लेकिन अब भारीभरकम बजट आवंटित करने के बाद वर्ष 2022 में नए सचिवालय भवन का टेंडर जारी कर दिया गया था जिस पर तेजी से काम चल रहा है और निर्धारित समय से पहले पूरा होने से क्षेत्र की जनता को जल्द ही उपमंडल भवन के रुप में एक ही छत के नीचे सभी सुविधाएं पाने का सपना पूरा होने वाला है।

भवन में इन विभागों के खुलेंगे दफ्तर

डिप्टी सीएम के दिशानिर्देश पर लोकनिर्माण विभाग ने इसके लिए 18करोड़ 18 लाख का बजट स्वीकृत करते हुए निर्माण प्रक्रिया शुरु करने पर कदम बढा दिए थे जिस पर तेजी से काम चल रहा है। लोकनिर्माण विभाग द्वारा बाढड़ा उपमंडल भवन निर्माण के लिए मई 2022 में 18 करोड़ 18 लाख की राशि जारी करते हुए 21 माह में इसको पूरा करने की समय सीमा निर्धारित की थी। प्रथम प्रारुप में तीन मंजिला भवन के एक साईड के निचले स्तर पर एसडीएम भवन, उपमंडल कोर्ट व राजस्व विभाग एवं परिवहन विभाग की शाखाएं, द्वितीय तल पर पुलिस विभाग व रिकार्ड, उपमंडल रोजगार कार्यालय, डीएसपी कार्यालय, सीडीपीओ, कानूनगो व पटवार भवन, कृषि विभाग के कार्यालय संचालित किए जाऐंगे।

बजट की राशि पूरी

लोकनिर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता कपूर सिंह ने बताया कि बाढड़ा में बन रहे लघु सचिवालय भवन का अधिक्तर कार्य पुरा हो गया है। बजट की 18.18 करोड़ की राशि पूरी हो चुकी है लेकिन बाहर टाईले लगाना,शीशे, एल्युमिनियम आदि का कार्य बकाया है। जिसके लिए लगभग 1.50 करोड़ रूपये का बजट बढ़वाने के लिए फाईल मुख्यालय भेजी है। राशि मिलते ही कार्य बजट की राशि पूरी, बजट बढ़वाने के लिए फाईल मुख्यालय भेजी है। लोकनिर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता कपूर सिंह ने बताया कि बाढड़ा में बन रहे लघु सचिवालय का अधिक्तर कार्य हो गया है। बजट की 18.18 करोड़ की राशि पूरी हो चुकी है लेकिन बाहर टाईले, शीशे, एल्युमिनियम आदि का कार्य बकाया है। बजट लगभग 1.50 करोड़ रूपये बढ़वाने के लिए फाईल मुख्यालय भेजी है। राशि मिलते ही कार्य को पूरा करवाकर विभाग को हैंडओवर करवा दिया जाएगा।

प्रोपर्टी आईडी ठीक करवाने की एवज में भ्रष्टाचार चरम पर : अशोक बुवानीवाला

भिवानी। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस उद्योग सैल के चेयरमैन अशोक बुवानीवाला ने प्रॉपर्टी आईडी में खामियों का मुद्दा उठाते हुए कहा है कि प्रदेश सरकार आम आदमी के लिए परेशानियों की सरकार बनती जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रॉपर्टी आईडी में पाई जा रही खामियां आम आदमी के लिए जी का जंजाल बनी हुई है। उन्होंने कहा कि प्रॉपर्टी आईडी में छोटी-छोटी गलतियों की भरमार हैं। इन्हें ठीक करने में संबंधित कर्मचारी आनाकानी करते हैं। अधिकांश प्रॉपर्टी आईडी में नाम, पता, मोबाइल, क्षेत्रफल और किसी अन्य के नाम प्रॉपर्टी जैसी गलतियों की भरमार हैं। यहीं कारण है कि निगम कार्यालयों में प्रॉपर्टी आईडी ठीक करवाने के लिए रिश्वत लेते रंगेहाथ पकड़े गए कर्मचारियों पर लोग अचंभित नहीं है, बल्कि लोग इतने परेशान है कि नगर निगम कार्यालयों में प्रॉपर्टी आईडी ठीक करवाने के लिए कर्मचारी की बात मानने को मजबूर होना पड़ता है और इन भ्रष्ट कर्मचारियों के सामने झुकना पड़ता है। बुवानीवाला ने कहा कि सिर्फ इतना ही नहीं अवैध कॉलोनाइजरों के साथ कर्मचारियों और जिला राजस्व कार्यालय के अधिकारियों की मिलीभगत से आए दिन प्रदेश में भ्रष्टाचार के नए-नए मुद्दें उजागर हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले तो नियमों को ताक पर नप कार्यालय गलत प्रॉपर्टी आईडी बना रहे हैं, उसके बाद उसी आधार पर प्रतिबंधित इलाके में फर्जी तरीके से भूमि रजिस्ट्री करवाई जा रही है।

नियुक्ति पर आभार जताया

मुकेश सोढी बने भाजपा कष्ट निवारण समिति के सदस्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। नवनियुक्त पदाधिकारी का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

बावड़ीगेट निवासी भाजपा विमुक्त एवं अर्ध घुमंतू जाति प्रकोष्ठ के जिला संयोजक मुकेश सोढी सिंगीकाट द्वारा किए जा रहे जनकल्याणकारी कार्यों को देखते हुए भाजपा कष्ट निर्वाण समिति का सदस्य चुना गया है। उन्होंने अपनी नियुक्ति पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ोली, बवानीखेड़ा से विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि व भाजपा जिला अध्यक्ष विरेन्द्र कौशिक का आभार जताते हुए कहा कि उन्हें जो जिम्मेवारी सौंपी है उसे वे पूरी निष्ठा के साथ पूरा करेंगे तथा प्रत्येक माह आयोजित होने वाली कष्ट निवार्ण समिति की बैठक में लोगों की समस्याओं का समाधान करवा उन्हें पार्टी के साथ जोडऩे का कार्य करेंगे। मुकेश सोढ़ी का कोंट रोड़ पर भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के पूर्व जिला मीडिया प्रभारी संजय लोहट खरकिया, समुंद्र सोढ़ी, मुखत्यार सिंह, नसबी, लखन सिंह समेत अनेक लोगों ने फूलमालाओं के साथ स्वागत किया।

महिलाओं से होती है म्हारी संस्कृति की पहचान: जांगड़ा

- महिलाओं के रहन-सहन व वेशभुषा से ही हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान
- इसे बढ़ाने के लिए महिलाओं को आगे आना चाहिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोग। फोटो : हरिभूमि

महिलाओं के रहन-सहन व वेशभुषा से ही हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान होती है। इसको आगे बढ़ाने के लिए महिलाओं व बेटियों को आगे आना चाहिए। यह बात म्हारी संस्कृति म्हारा स्वाभिमान संगठन द्वारा महिलाओं के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संगठन की महिला विंग प्रमुख डा. सुशीला जांगड़ा ने कही। उन्होंने कहा कि म्हारी संस्कृति के प्रति युवाओं को जागरूक करने के लिए तथा गानों में चल रही अभद्रता को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। कार्यक्रम में मुख्यरूप से संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हनुमान कौशिक ने शिरकत की तथा महिलाओं का हौंसला बढ़ाया। कार्यक्रम संयोजक कलाकार सुदेश हिसार व सुनीता मलिक ने अतिथिगणों का स्वागत किया और विश्वास दिलाया कि वे संगठन द्वारा चलाए जा रहे अभियान के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए अथक प्रयास करेंगी। इसी कड़ी में आरती दुग्गल ने अपने गीत के माध्यम से अभद्र डांस की कड़े शब्दों में निंदा की। इस अवसर पर मन्नू जींद, नीलम चौधरी, पूनम बिश्रोई, खुशी दिनोदिया, मीना शर्मा हांसी उपस्थित रही।

अपहरण कर चोट करने के मामले में मुख्य आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

- पुलिस टीम के द्वारा आरोपी को न्यायालय में पेश कर एक दिन के रिमांड पर लिया
- रिमांड पर लेने के बाद पुलिस करेगी अतिरिक्त पूछताछ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

थाना लोहारू पुलिस ने व्यक्ति का अपहरण करके चोट मारने के मामले में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आनंद निवासी लाला माण्डी जिला झुंझुनू राजस्थान में थाना लोहारू पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि वह अपनी मोटरसाइकिल पर किसी काम से बस स्टैंड लोहारु आया था जहां पर आरोपियों के द्वारा शिकायतकर्ता को गाड़ी में डालकर गांव खोरडा लेकर गए थे जहां उसके साथ मारपीट की थी। जो इस शिकायत पर पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत अभियोग थाना लोहारू में दर्ज किया था। अभियोग में प्रभावी कार्यवाही करते हुए थाना लोहारू के उप निरीक्षक रोहतास सिंह ने व्यक्ति का अपहरण कर चोट मारने के मामले में मुख्य आरोपी को लोहारू से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान ललित कुमार पुत्र ओम प्रकाश निवासी खोरडा के रूप में हुई है। पुलिस टीम के द्वारा आरोपी को पेश न्यायालय में कर एक दिन के पुलिस रिमांड पर हासिल किया गया था। पुलिस टीम के द्वारा आरोपी से अपहरण की वारदात में प्रयोग की गई एक गाड़ी को भी बरामद किया गया है।

बीडीपीओ कार्यालय में 10 से 16 जुलाई को होगा प्रशिक्षण कार्यक्रम: एसडीएम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| लोहारू

लोहारू क्षेत्र के बूथ लेवल अधिकारियों के कर्तव्य और दायित्व के विषय में स्थानीय बीडीपीओ कार्यालय में 10, 11, 14, 15 व 16 जुलाई को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी बूथ लेवल अधिकारियों को उनके कर्तव्य और जिम्मेवारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

लोहारू विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचन पंजीयन अधिकारी एवं एसडीएम मनोज दलाल ने बताया कि बीएलओ को 10, 11, 14, 15 और 16 जुलाई को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीएलओ की नियुक्ति, कार्य और जिम्मेदारियों की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में तहसीलदार कम निर्वाचन पंजीयन अधिकारी एक तथा नायब तहसीलदार को सहायक निर्वाचन पंजीयन अधिकारी दो नियुक्त किया गया है। कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर विस्तार से बीएलओ की कार्य, जिम्मेदारी और दायित्व के बारे में जानकारी देंगे। कार्यक्रम में बीएलओ किस प्रकार चुनाव कार्य में अपनी बेहतर जिम्मेदारी निभा सकता है कि जानकारी दी जाएगी।

रेडक्रॉस सोसायटी का रक्तदान शिविर और निःशुल्क टीबी जांच शिविर कल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा रैडक्रॉस अध्यक्ष एवं उपायुक्त महाबीर कौशिक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनके सम्मान में रैडक्रॉस भवन में 30 जून को प्रातः 9.30 बजे रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा 30 जून को ही भिवानी रैडक्रॉस सोसायटी द्वारा सिटी स्टेशन रोड पर राजीव कॉलोनी के श्याम जी पब्लिक स्कूल में निःशुल्क टीबी जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए रैडक्रॉस सचिव प्रदीप कुमार ने दी। उन्होंने सभी स्वस्थ व्यक्तियों से आगे आकर रक्तदान की नेक मुहिम में भागीदारी करने की अपील की। उन्होंने बताया कि उपायुक्त महाबीर कौशिक का कार्यकाल भिवानी जिला के विकास और जन कल्याण के लिए अत्यंत सराहनीय रहा है। उनके सम्मान में आयोजित यह शिविर समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि रक्तदान एक ऐसी मुहिम है, जिसके माध्यम से हम जरूरतमंद मरीजों का जीवन बचाने में सहयोग कर सकते है। इसीलिए रक्तदान को महादान कहा गया है। सचिव ने बताया कि इसी दिन 30 जून को निःशुल्क टीबी जांच शिविर भी आयोजित होगा। जिसमें नागरिक हस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा टीबी की जांच की जाएगी और संदिग्ध मामलों में आगे की सलाह व उपचार के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

धर्मबीर बने कष्ट निवारण समिति के सदस्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

- धर्मबीर सैनी को जिला कष्ट निवारण समिति में बतौर सदस्य नियुक्ति प्रदान की गई है, जिसके सभी ने उन्हे बधाई संदेश भेजे

पिछले लंबे समय से सामाजिक कार्यों में अपनी सहभागिता निभा रहे धर्मबीर सैनी को जिला कष्ट निवारण समिति में बतौर सदस्य नियुक्ति प्रदान की गई है। उनके इस मनोयन पर क्षेत्र के मौजिज व्यक्तियों द्वारा अपनी प्रसन्नता का इजहार किया गया। साथ में उनका स्वागत करते हुए सम्मानित भी किया गया। सैनी समाज प्रधान जगमाल सैनी की अगुवाई में उन्हें सम्मानित किया गया।

आयोजित अभिनंदन समारोह के दौरान विभिन्न वार्डो के पार्षदों, प्रतिनिधियों व मौजिज व्यक्तियों की उपस्थिति में उन्हें मनोयन की बधाई दी गई व उनका स्वागत फूल मालाओं से किया गया। सभी ने उम्मीद जाहिर कि अपनी नई जिम्मेदारी को धर्मबीर सैनी पूरी तरह से निभाएंगे व अपने दायित्व पर खरे उतरेंगे। उन्होंने अपने मनोयन पर मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडौली, सांसद धर्मबीर सिंह, विधायक सुनील सतपाल सांगवान व बाढड़ा विधायक उमेद पातुवास, दादरी बीजेपी जिलाध्यक्ष सुनील इंजीनियर सहित समस्त वरिष्ठों का आभार जताया। गौरतलब है कि प्रदेश सरकार के आदेशानुसार हाल ही में जिला कष्ट निवारण समिति में नए सदस्यों का मनोयन किया गया है। इस कदम के पीछे सरकार का यही लक्ष्य है कि अधिक से अधिक आम नागरिकों को सुविधाएं देते हुए उनको होने वाली समस्याओं को हल करवाने के लिए काम किया जा सके। कष्ट निवारण समिति में क्षेत्र के उन मौजिज लोगों को शामिल किया जाता है जो कि पिछले लंबे समय से अपने कार्य के जरिए जन सेवा में लगातार सक्रिय है। इसी कडी में धर्मबीर सैनी को यह नई जिम्मेदारी प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार दी गई है।सैनी समाज प्रधान जगमाल सैनी की अगुवाई में उन्हें सम्मानित किया गया।

सता रही चिंता निकासी का रास्ता नहीं होने से बढ़ेंगी लोगों की दिक्कतें

बारिश आते ही डूब सकती है गाड़िया लोहार बस्ती, दुकानों में घुसेगा पानी

- बवानी खेड़ा में वीरवार को आई मूसलाधार बारिश ने एक तरफ जहां किसानों को राहत दी और गर्मी से निजात दिलाई वहीं दूसरी और उमस ने जीना दुभर कर दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा। गाड़िया लोहार बस्ती के आगे जमा गंदा पानी। फोटो: हरिभूमि

बवानी खेड़ा में वीरवार को आई मूसलाधार बारिश ने एक तरफ जहां किसानों को राहत दी और गर्मी से निजात दिलाई वहीं दूसरी और उमस ने जीना दुभर कर दिया। शहर में जहां देखो पानी ही पानी जमा हो गया। वहीं नगर पालिका कार्यालय एवं वीके फोटो स्टेट हरिभूमि कार्यालय के पीछे खाली मैदान में पानी लबालब हो गया मानों तालाब स्थापित किया गया और यहां लोग किस्ती में बैठकर भ्रमण करने आएं हो। दुकानदारों के भी होश फाख्ता हो गए। वहीं शनिवार को फिर से मौसम बदला और बारिश की उम्मीद हो गई।

लोगों में प्रमिल, अशोक, श्यामसुंदर, हरिराम, सुरेश, महेश, रमेश, मुकेश आदि ने बताया कि अगर अब बारिश होती है तो मैदान के साथ गाडिया लोहार बस्ती पानी में डूब जाएगी और दुकानदारों की दुकानों में पानी भर जाएगा। नगर पालिका सफाई कर्मचारियों के पास केवल नाली नाले साफ करने का ही बंदोबस्त है जिसमें वे कर्मचारी लगे रहते हैं लेकिन पानी निकासी के लिए पुख्ता इंतेजामात नहीं है जिसके कारण दुकानदारों के भय बना हुआ है। बता दे की दो माह पहले भी बारिश में दुकानों में पानी घुसने से दुकानदारों का लाखों का नुकसान हो गया था। दुकानदारों ने विभाग से मुआवजे की भी गुहार लगाई थी लेकिन इस बार बारिश होने से अधिक नुकसान होने का भय है। दूसरी तरफ इस बारे में नपा सचिव संदीप गर्ग ने बताया कि नाले-नालियों की सफाई व्यवस्था का कार्य बदस्तूर जारी है। जल्द टैंडर लगाकर व्यवस्था को दुरूस्त करने का कार्य किया जाएगा ताकि परेशानियों का सामना ना करना पड़े।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

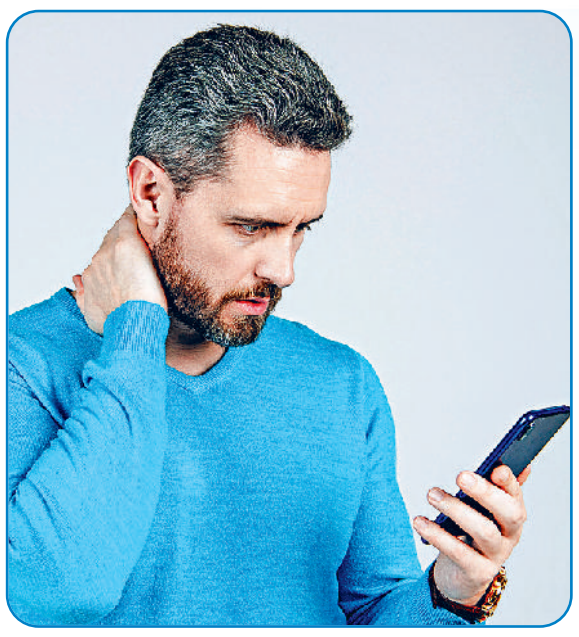

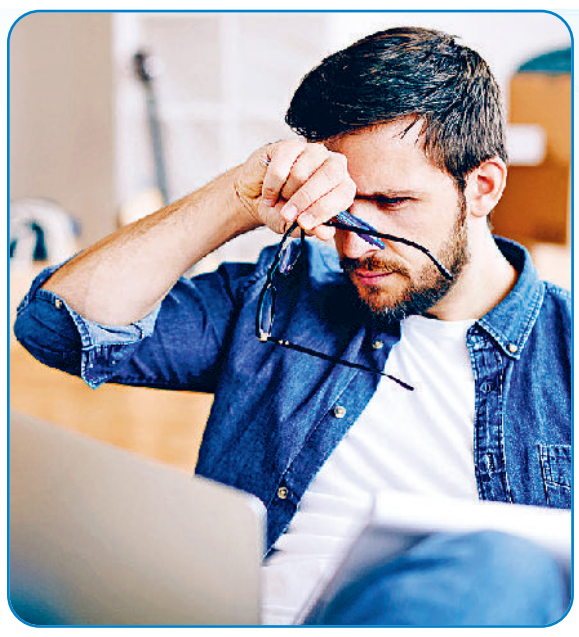

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

स्पेशल: वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूज: कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्स: सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

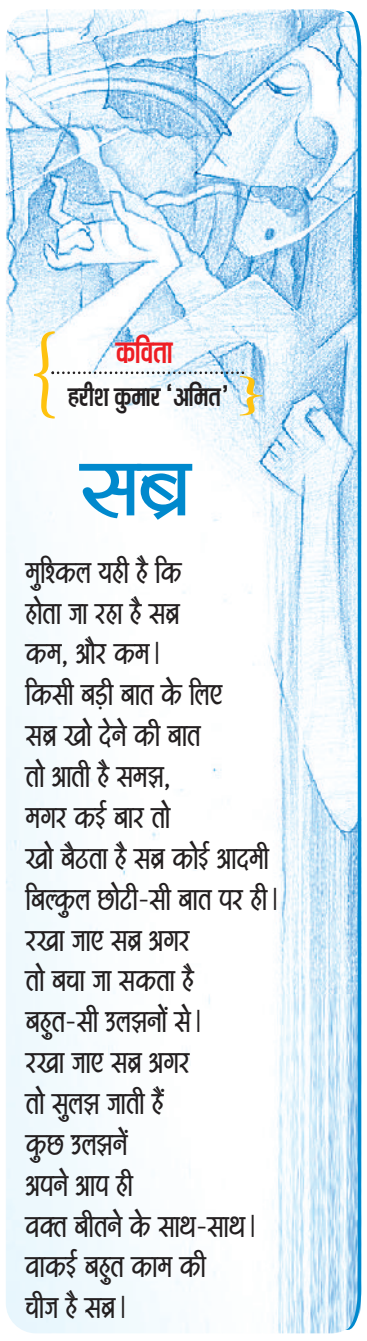

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

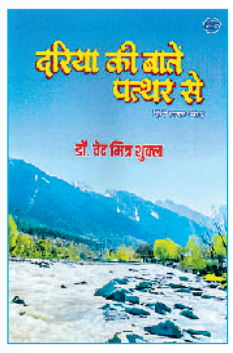

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तक: दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखक: डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्य:** 290 रुपए,
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

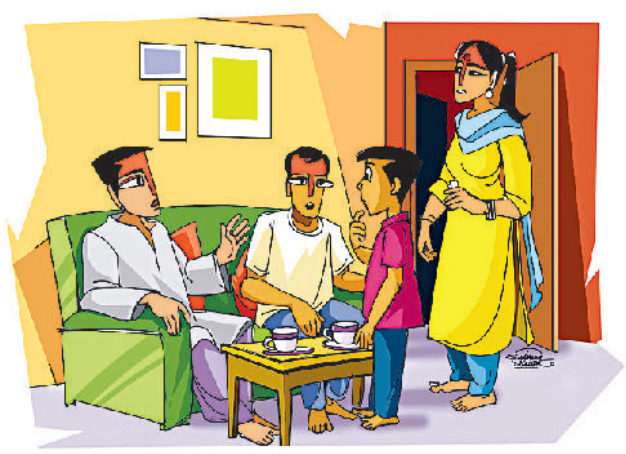

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

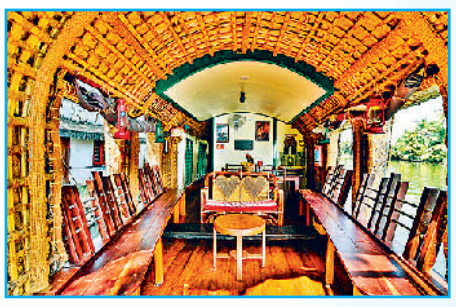

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *